IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

मुगल वास्तुकला के विकास में इस्लामी स्थापत्य परंपराओं की भूमिका

त्रिभुवन कुमार[1] and डॉ. शोभा केशेरानी[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास-विभाग

[2]प्रोफेसर, इतिहास-विभाग

सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

मुगल काल भारतीय स्थापत्य इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसमें कला, संस्कृति और वास्तुकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। मुगल शासकों ने अपने साथ मध्य एशियाई और फारसी सांस्कृतिक परंपराएँ भारत में लाईं, जिनमें इस्लामी स्थापत्य परंपराएँ प्रमुख थीं। इन परंपराओं ने भारतीय स्थापत्य शैली को एक नया स्वरूप प्रदान किया। गुंबद, मेहराब, मीनार, चारबाग योजना, सुलेख कला, ज्यामितीय अलंकरण और टाइल सजावट जैसे तत्व इस्लामी स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ थीं, जिनका व्यापक उपयोग मुगल कालीन इमारतों में किया गया। इस समीक्षा अध्ययन का उद्देश्य मुगल वास्तुकला के विकास में इस्लामी स्थापत्य परंपराओं की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि मुगल स्थापत्य केवल विदेशी परंपराओं का अनुकरण नहीं था, बल्कि यह भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैलियों के समन्वय का परिणाम था। मुगल काल की इमारतें आज भी इस सांस्कृतिक समन्वय और कलात्मक उत्कृष्टता का जीवंत उदाहरण हैं।

मुख्य संकेतक: - इस्लामी स्थापत्य परंपरा, फारसी स्थापत्य प्रभाव, गुंबद और मेहराब।

परिचय

भारतीय स्थापत्य इतिहास में मुगल काल (1526–1707 ई.) को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल में निर्मित भवनों की भव्यता, सौंदर्य और स्थापत्य तकनीक ने भारतीय वास्तुकला को नई ऊँचाइयों तक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

पहुँचाया। मुगल शासक मूलतः मध्य एशिया से आए थे और उनकी सांस्कृतिक जड़ें फारसी और इस्लामी परंपराओं से जुड़ी हुई थीं। इसलिए उनके द्वारा निर्मित भवनों में इस्लामी स्थापत्य शैली के कई महत्वपूर्ण तत्व दिखाई देते हैं।

इस्लामी स्थापत्य की विशेषताओं में सममितीय योजना, गुंबद, मेहराब, मीनार, चारबाग उद्यान योजना, सुलेख कला और वास्तुशिल्प सजावट शामिल हैं। मुगल शासकों ने इन तत्वों को भारतीय स्थापत्य के साथ मिलकर एक ऐसी नई शैली विकसित की जो भारतीय और इस्लामी परंपराओं के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण बन गई (अशर, 1992)।

मुगल वास्तुकला केवल धार्मिक परंपराओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें महल, किला, मकबरे, उद्यान और सार्वजनिक भवन भी शामिल थे। इन परंपराओं की संरचना और सजावट में इस्लामी स्थापत्य की गहरी छाप दिखाई देती है।

मुगल वास्तुकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मुगल साम्राज्य की स्थापना 1526 ई. में बाबर द्वारा की गई थी। बाबर एक कुशल सेनापति होने के साथ-साथ कला और स्थापत्य का संरक्षक भी था। उसने भारत में कई उद्यानों और इमारतों का निर्माण कराया। बाबर को विशेष रूप से फारसी शैली के उद्यानों से प्रेम था, इसलिए उसने भारत में "चारबाग" योजना के अनुसार उद्यानों का निर्माण कराया (ब्लेयर एंड ब्लूम, 2003)।

चारबाग योजना इस्लामी स्वर्ग की अवधारणा से प्रेरित थी, जिसमें चार नदियों से घिरा एक सुंदर उद्यान की कल्पना की जाती है। इस योजना में उद्यान को चार समान भागों में विभाजित किया जाता था और बीच में जलधाराएँ तथा फव्वारे बनाए जाते थे।

बाबुल के बाद हुमायूँ के शासनकाल में भी इस्लामिक स्थापत्य परंपराओं का प्रभाव जारी रहा। हुमायूँ का मकबरा मुगल स्थापत्य का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। यह मकबरा फारसी वास्तुकार मिराक मिर्जा गियास द्वारा डिजाइन किया गया था और इसमें विशाल गुंबद, सममितीय योजना और चारबाग उद्यान का प्रयोग किया गया था (एशर एंड टैलबोट, 2006)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

इस्लामी स्थापत्य के प्रमुख तत्व

मुगल वास्तुकला में इस्लामी स्थापत्य के कई महत्वपूर्ण तत्वों का उपयोग किया गया, जिनमें गुंबद, मेहराब, मीनार और ज्यामितीय सजावट प्रमुख हैं।

(क) गुंबद (Dome)

गुंबद इस्लामी वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह भवन की भव्यता और आध्यात्मिकता को दर्शाता है। मुगल काल की कई इमारतों में विशाल गुंबदों का निर्माण किया गया, जो स्थापत्य कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

(ख) मेहराब (Arch)

पूर्वजों के द्वार और खिड़कियाँ इस्लामी स्थापत्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता हैं। मुगल इमारतों में बड़े और सुंदर पूर्वजों बनाए जाते थे जो भवन की संरचनात्मक प्रवेश और सुंदरता दोनों को घुमाते थे (ब्राउन, 2013)।

(ग) मीनार (Minaret)

मीनारें इस्लामिक स्थापत्य का धार्मिक और सौंदर्यपरक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण अंग हैं। ताजमहल की चारों मीनारें इस स्थापत्य शैली की मुद्रित प्रतियां हैं (कोच, 2006)।

(घ) ज्यामितीय और पुष्पीय सजावट

इस्लामी कला में चित्रात्मक आकृतियों के बजाय ज्यामितीय और पुष्पीय डिजाइनों का प्रयोग अधिक किया जाता है। मुगल भवनों में भी इन सजावटी तकनीकों का व्यापक उपयोग किया गया।

अकबर काल में स्थापत्य का विकास

अकबर के शासनकाल में मुगल वास्तुकला ने एक नई दिशा प्राप्त की। अकबर ने भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैलियों का समन्वय किया। उसके द्वारा निर्मित फतेहपुर सीकरी इस समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

फतेहपुर सीकरी में बने दीवान-ए-खास, पंचमहल और बुलंद दरवाजा जैसी इमारतों में इस्लामी स्थापत्य के साथ-साथ भारतीय स्थापत्य के तत्व भी दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए छतरियाँ, स्तंभयुक्त मंडप और झरोखे भारतीय शैली के प्रतीक हैं (Michell, 2008)।

जहाँगीर काल में सजावटी कला का विकास

जहाँगीर के शासनकाल में मुगल वास्तुकला में सजावटी कला का अधिक विकास हुआ। इस समय संगमरमर की जड़ाई, टाइल कला और पत्थरों की नक्काशी का व्यापक प्रयोग किया गया। इस काल में कई मकबरों

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

और उद्यानों में फूल और पौधों की आकृतियों का सुंदर चित्रण मिलता है। यह सजावट इस्लामी कला की सौंदर्यपरक परंपराओं को दर्शाती है (टिलोटसन, 2010)।

जहांगीर का शासनकाल (1605–1627 ई.) मुगल साम्राज्य के इतिहास में कला और संस्कृति के उत्कर्ष का महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। यद्यपि मुगल स्थापत्य का स्वर्ण युग प्रायः शाहजहाँ के काल को माना जाता है, फिर भी जहांगीर के समय में सजावटी कला, अलंकरण और कलात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास हुआ। जहांगीर स्वयं प्रकृति, चित्रकला और सौंदर्य के प्रति अत्यंत संवेदनशील शासक था। उसकी रुचि विशेष रूप से बाग-बगीचों, पुष्पीय आकृतियों, चित्रण और सजावटी स्थापत्य में थी।

परिणामस्वरूप उसके शासनकाल में मुगल स्थापत्य और शिल्पकला में अलंकरण की परंपरा को नया आयाम मिला। इस काल में दीवारों, स्तंभों और द्वारों पर अत्यंत सूक्ष्म और सुंदर सजावट की जाने लगी, जिससे मुगल स्थापत्य की भव्यता और कलात्मकता में वृद्धि हुई (अशर, 1992)। जहाँगीर काल की सजावटी कला का सबसे प्रमुख पहलू प्राकृतिक रूपों का व्यापक उपयोग था। जहाँगीर को प्रकृति, पशु-पक्षियों और फूलों से विशेष प्रेम था, जिसका प्रभाव उस समय की कला और स्थापत्य में स्पष्ट दिखाई देता है। दीवारों की दीवारें, जाली और संगमरमर की पट्टियों पर फूल, बेल-बूटों और पेड़ों की आकृतियों को बड़ी बनावट से उकेरा जाता था। यह सजावटी शैली मुगल कला को एक सौम्य और आकर्षक स्वरूप प्रदान करती थी। इस प्रकार प्राकृतिक सौंदर्य को स्थापत्य सजावट का महत्वपूर्ण अंग बनाया गया, जो आगे बढ़ते शाहजहाँ के काल में और अधिक विकसित हुआ (कोच, 2006)।

जहाँगीर के समय में संगमरमर के उपयोग में भी वृद्धि हुई और इसके साथ-साथ संगमरमर की जड़ाई (पिएट्रा ड्यूरा) की तकनीक का प्रारंभिक विकास हुआ। इस तकनीक में विभिन्न रंगों के कीमती और अर्ध-कीमती पत्थरों को संगमरमर की सतह में जड़कर सुंदर आकृतियाँ बनाई जाती थीं। यह तकनीक मूलतः फारसी और मध्य एशियाई कला से प्रेरित थी, लेकिन मुगल कारीगरों ने इसे भारतीय शैली के साथ मिलकर एक नई कलात्मक परंपरा का रूप दिया। जहाँगीर के समय में बनी कई इमारतें और मकबरों में इस तकनीक का प्रारंभिक प्रयोग देखा जा सकता है, जो आगे बढ़कर ताजमहल जैसी महान स्थापत्य कृतियों की नींव तैयार की (टिलोटसन, 2010)।

जहाँगीर काल में जाली कला (छिद्रित स्क्रीन वर्क) का भी व्यापक विकास हुआ। पत्थर की जाली को अत्यंत मजबूती से तराशा जाता था, जिससे वे प्रकाश और हवा के ढकेल को नियंत्रित करने के साथ-साथ भवन को सुंदरता भी प्रदान करती थीं। जाली में प्रायः ज्यामितीय आकृतियों और पुष्पीय रूपांकनों का संयोजन किया

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

जाता था। यह सजावट इस्लामी कला की उस परंपरा को उजागर करती है जिसमें ज्यामितीय संतुलन और सममिति को विशेष महत्व दिया जाता है। जाली कार्य न केवल सजावटी था, बल्कि यह भवन के भीतर एक शांत और सौम्य वातावरण भी उत्पन्न करता था (ब्लेयर एंड ब्लूम, 2003)।

जहाँगीर के समय में टाइल कला और रंगीन सजावट का भी व्यापक उपयोग किया गया। दीवारों और गुंबदों को रंगीन टाइलों से समृद्ध जाता था, जिन पर सुंदर वास्तुशिल्प और पुष्पीय आकृतियाँ बनाई जाती थीं। यह परंपरा विशेष रूप से फारसी स्थापत्य से प्रेरित थी। रंगीन टाइलों का प्रयोग पट्टियों को आकर्षक बनाने के साथ-साथ उन्हें एक विशिष्ट पहचान भी प्रदान करता था। इस प्रकार सजावटी कला के माध्यम से मुगल स्थापत्य को अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनाया गया (मिशेल, 2008)। जहाँगीर काल की सजावटी कला में सुलेख (सुलेख) का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इस्लामी स्थापत्य परंपरा में सुलेख को एक पवित्र और कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। मुगल सीढ़ियों की दीवारें, प्रवेश द्वारों और गुंबदों पर कुरान की आयतों को अत्यंत सुंदर और कलात्मक शैली में अंकित किया जाता था। यह न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक था, बल्कि स्थापत्य की सौंदर्यात्मकता को भी उन्नत था। जहाँगीर के समय में सुलेख कला के कई उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलते हैं, जो उस समय के कलाकारों की उच्च स्तर की कौशलता को दर्शाते हैं (ब्राउन, 2013)।

इसके अतिरिक्त जहाँगीर के शासनकाल में उद्यान स्थापत्य और बाग कला का भी महत्वपूर्ण विकास हुआ। मुगल शासक बाग-बगीचों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध थे, और जहाँगीर ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। उसने काल में कई सुंदर उद्यानों का निर्माण किया, जिनमें जलधाराएँ, फव्वारे और संगमरमर के मंडप बनाए जाते थे। इन उद्यानों की सजावट में भी पुष्पीय और ज्यामितीय अलंकरण का व्यापक उपयोग किया जाता था। यह उद्यान केवल मनोरंजन के स्थल नहीं थे, बल्कि वे उस समय की स्थापत्य और सजावटी कला के उत्कृष्ट उदाहरण भी थे (एशर एंड टैलबोट, 2006)।

उदाहरण के लिए भारतीय पुष्पीय आकृतियाँ, बेल-बूटे और पत्थर की बनी मुगल आकृतियों की सजावट में व्यापक रूप से प्रयुक्त होने वाली किस्में। इस प्रकार मुगल सजावटी कला एक ऐसी शैली बन गई जिसमें फारसी, मध्य एशियाई और भारतीय तत्वों का समन्वय देखने को मिलता है।

जहाँगीर के समय में बने मकबरे और अन्य भवन इस सजावटी कला के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। आगरा में स्थित इतमाद-उद-दौला का मकबरा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसे अक्सर "मिनी ताजमहल" कहा जाता है क्योंकि इसमें संगमरमर की जड़ाई और टिकाऊ निर्मित का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

इस मकबरे की सजावट में फूलों की आकृतियाँ, रंगीन पत्थरों की जड़ाई और जाली कार्य का अद्भुत संयोजन देखने को मिलता है। यह भवन मुगल सजावटी कला के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण माना जाता है (कोच, 2006)।

समग्र रूप से देखा जाए तो जहाँगीर काल मुगल सजावटी कला के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था। इस काल में स्थापत्य सजावट में सूक्ष्मता, सौंदर्य और प्राकृतिक रूपांकनों का विशेष महत्व रहा। संगमरमर की जड़ाई, जाली कार्य, टाइल सजावट और सुलेख कला जैसी तकनीकों का व्यापक उपयोग किया गया। इन सभी तत्वों ने मुगल स्थापत्य को एक विशिष्ट और भव्य स्वरूप प्रदान किया।

यह कहा जा सकता है कि जहाँगीर का शासनकाल मुगल सजावटी कला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का काल था। इस समय विकसित हुई सजावटी तकनीकों और कलात्मक परंपराओं ने आगे चलकर शाहजहाँ के काल में मुगल स्थापत्य को उसकी सर्वोच्च ऊँचाई तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसलिए जहाँगीर काल की सजावटी कला का अध्ययन मुगल वास्तुकला के विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शाहजहाँ काल में मुगल वास्तुकला की पराकाष्ठा

शाहजहाँ का शासनकाल मुगल वास्तुकला का स्वर्ण युग माना जाता है। इस समय निर्मित भवनों में भव्यता, सममिति और सौंदर्य का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

ताजमहल

ताजमहल मुगल वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसमें सफेद संगमरमर का उपयोग, विशाल केंद्रीय गुंबद, चारों कोनों पर मीनारें और सुंदर चारबाग योजना इस्लामी स्थापत्य की विशेषताओं को दर्शाती हैं।

लाल किला

लाल किला भी शाहजहाँ द्वारा निर्मित एक भव्य स्थापत्य कृति है। इसमें महलों, उद्यानों और मस्जिदों का सुंदर संयोजन दिखाई देता है।

जामा मस्जिद

दिल्ली की जामा मस्जिद मुगल काल की सबसे बड़ी मस्जिदों में से एक है। इसमें विशाल प्रांगण, ऊंची मीनारें और सुंदर ऊंचे द्वार इस्लामी स्थापत्य की भव्यता को प्रदर्शित करते हैं (कोच, 2006)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

मुगल वास्तुकला में सजावटी तकनीकें

मुगल वास्तुकला की सजावट में जाली कार्य, टाइल कला, संगमरमर की बनाई और पत्थरों की जड़ाई का व्यापक उपयोग किया गया। जाली कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पत्थर की जालियों को इस प्रकार तराशा जाता था कि वे प्रकाश और हवा के मिश्रित को नियंत्रित करते हुए भवन को सुंदरता प्रदान करें। इसके अतिरिक्त दीवारों पर कुरान की आयतों को सुंदर सुलेख में अंकित किया जाता था, जो इस्लामी कला की एक महत्वपूर्ण परंपरा है (ब्लेयर एंड ब्लूम, 2003)।

भारतीय और इस्लामी शैलियों का समन्वय

भारतीय स्थापत्य इतिहास में मुगल काल वह समय था जब विभिन्न सांस्कृतिक और स्थापत्य परंपराओं का अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। विशेष रूप से भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैलियों का समन्वय मुगल वास्तुकला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता माना जाता है। जब मुगल शासक मध्य एशिया और फारस से भारत आए, तो वे अपने साथ इस्लामी स्थापत्य की समृद्ध परंपराएँ भी लेकर आए। दूसरी ओर भारत में पहले से ही हिंदू, बौद्ध और जैन स्थापत्य की समृद्ध परंपरा मौजूद थी। इन दोनों परंपराओं के परस्पर संपर्क और संवाद के परिणामस्वरूप एक नई मिश्रित स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसे हम आज मुगल वास्तुकला के नाम से जानते हैं। यह शैली केवल विदेशी प्रभाव का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह भारतीय शिल्पियों की रचनात्मकता और स्थानीय परंपराओं के समावेश का भी उत्कृष्ट उदाहरण थी।

भारतीय इस्लामी और स्थापत्य शैली के समन्वय का प्रारंभिक स्वरूप मुगल साम्राज्य के प्रारंभिक काल में दिखाई देता है। बाबर और हुमायूँ के समय में मुख्यतः इस्लामी और फ़ज़ी स्थापत्य का प्रभाव दिखाई दिया, लेकिन अकबर के शासनकाल में यह समन्वय अधिक स्पष्ट रूप से विकसित हुआ। अकबर एक उदार और दूरदर्शी शासक था, जिसने विभिन्न धर्मों और संरचनाओं के बीच सामंजस्य बिठाने का प्रयास किया। यही विचार उनकी स्थापत्य प्रतियोगिता में भी दिखाई देता है। उन्होंने स्थानीय भारतीय कलाकारों और शिल्पकारों का संरक्षण किया और उन्हें मुगल बाग के निर्माण में शामिल किया। इसके परिणामस्वरूप मुगल वास्तुकला में भारतीय स्थापत्य के कई तत्व शामिल होने लगे, जैसे छतरियां, झरोखे, स्तंभयुक्त मंडप और जालीदार खिड़कियाँ (एशर, 1992)।

इस्लामी स्थापत्य की दुकानों में स्मारक, मेहराब, मीनार और समिति योजनाएँ प्रमुख हैं। मुगल साम्राज्य में इन सामानों का व्यापक उपयोग किया गया। उदाहरण के तौर पर मस्जिदों और मकबरों में बड़ी-बड़ी मूर्तियां

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

बनाई गईं, जिनमें इस्लामी स्थापत्य के प्रमुख प्रतीक हैं। इसी प्रकार की मस्जिदें मस्जिद और खिड़कियाँ भी इस्लामी शैली की पहचान हैं। लेकिन इन उपकरणों को भारतीय स्थापत्य के साथ इस प्रकार संकलित किया गया है कि वे एक नई शैली का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए कई मुगल वास्तुकला में महराजबदार द्वारों के ऊपर भारतीय शैली की छतरियां बनाई गई हैं, जो इस सहयोग का सुंदर उदाहरण पेश करती हैं (ब्राउन, 2013)।

उदयपुर सीकरी भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैली के सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे मुगल सिटी द्वारा निर्मित अकबर की मूर्ति के रूप में माना जाता है। यहां इस्लामिक स्थापत्य के साथ-साथ हिंदू और जैन स्थापत्य की विशेषताएं भी दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए दीवाने-ए-खास की संरचना में स्तंभों और छतरियों का उपयोग भारतीय शैली को शामिल किया गया है, जबकि इसके प्रवेश द्वारों में मेहराबदार संरचना इस्लामी स्थापत्य का प्रतिनिधित्व करती है। इसी प्रकार पंचमहल की संरचना भी भारतीय मंदिर वास्तुकला से प्रभावित दिखाई देती है, जिसमें बहु-मूर्ति स्मारकों और स्तंभों का प्रयोग किया गया है (मिशेल, 2008)।

मुगल वास्तुकला में सजावटी कला के क्षेत्र में भी भारतीय और इस्लामी शैली का समन्वय स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस्लामी कला में चित्रात्मक उपाख्यानों के बजाय पुष्प और पुष्प डिजाइनों का उपयोग अधिक किया जाता है। उदाहरण के लिए मुगल महल की दीवारें और छतों पर पुष्पांजलि, पुष्प शिखर और सुलेख कला का व्यापक प्रयोग किया गया। दूसरी ओर भारतीय कला में प्रकृति और वनस्पति के चित्रण की परंपरा पहले से ही समान थी। मुगल कलाकारों ने इन दोनों को मिलाकर एक नई सजावटी शैली विकसित की, जिसमें मार्बल की जड़ें, पत्थरों से बनी और रंगीन टाइलों का सुंदर संयोजन दिखाई देता है (ब्लेयर एंड ब्लूम, 2003)।

शाहजहाँ के काल में यह समन्वय अपने चरम पर पहुँच गया। इस समय निर्मित विद्वान भारतीय और इस्लामी शैली शैली के समन्वय का सर्वोत्तम उदाहरण है। बौद्धों की समिति योजना, विशाल केंद्रीय स्मारक और चारों ओर स्थित मीनारें इस्लामी स्थापत्य के तत्व हैं, जबकि इसके चारों ओर उद्यान, जालीदार खिड़कियाँ और संगमरमर की निर्मित भारतीय शिल्प परंपरा को दर्शाया गया है। इसकी अतिरिक्त दीवारों पर पिएत्रा ड्यूरा (पत्थरों की जड़ाई) तकनीक भी भारतीय कलाकारों की उत्कृष्ट कला का उदाहरण है (कोच, 2006)।

भारतीय इस्लामी वास्तुकला शैली के समन्वय का एक महत्वपूर्ण आधार यह भी है कि मुगल वास्तुकला ने स्थानीय जलवायु और भूगोल के अनुसार भी अपने स्वरूप को अनुकूलित किया। उदाहरण के लिए भारत की जलवायु गर्माहट को ध्यान में रखते हुए किचन में बड़ी-बड़ी बेलें, जालीदार खिड़कियाँ और खुली दुकानें बनाई गईं, जिससे हवा का सहारा बना रहे और भवन के अंदर ठंडक बनी रही। यह भारतीय स्थापत्य की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

परंपरा से प्रेरित थी। इसी प्रकार की छतरियां और झरोखे भी भारतीय शैली के तत्व हैं, जिनमें मुगल मुगल में व्यापक रूप से शामिल किया गया है (टिलोटसन, 2010)।

इसका अतिरिक्त मुगल स्थापत्य में धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता का भी प्रभाव दिखाई देता है। कई मुगल वास्तुशिल्प में हिंदू और इस्लामी प्रतीकों का मिश्रण देखने को मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुगल स्थापत्य केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व नहीं करता था, बल्कि यह विभिन्न शैलियों के बीच संवाद और समन्वय का परिणाम था। यही कारण है कि मुगल वास्तुकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है।

समग्र रूप से देखा जाए तो भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैली का समन्वय मुगल वास्तुकला की आत्मा है। इस सहयोग ने भारतीय स्थापत्य को एक नई दिशा दी और इसे वैश्विक स्तर पर मान्यता दी। मुगल काल की रचनाएँ न केवल स्थापत्य कला की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं, बल्कि वे उस सांस्कृतिक समन्वय और सहिष्णुता का भी प्रतीक हैं जिन्होंने भारतीय समाज को समृद्ध बनाया। सोसायटी, सोसाइटी सीकरी, लाल किला और हुमायूँ का मकबरा जैसी इमारतें आज भी अनोखी वास्तुकला सहयोग का जीवंत उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए मुगल वास्तुकला का अध्ययन हमें यह समझने में सहायता करता है कि किस प्रकार विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं को मिलाकर एक नई और समृद्ध कला शैली का निर्माण किया जाता है, जो समय की सीमा को पार करते हुए आज भी मानव सभ्यता की अमूल्य रसायन बनी हुई है (एशर, 1992; ब्लेयर एंड ब्लूम, 2003; कोच, 2006)।

मुगल वास्तुकला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता भारतीय और इस्लामी स्थापत्य शैलियों का समन्वय है। मुगल शासकों ने स्थानीय कारीगरों को संरक्षण दिया, जिससे भारतीय स्थापत्य के कई तत्व मुगल भवनों में शामिल हो गए।

उदाहरण के लिए छतरियाँ, झरोखे, स्तंभयुक्त मंडप और जालीदार खिड़कियाँ भारतीय स्थापत्य की विशेषताएँ हैं, जबकि गुंबद, मेहराब और मीनार इस्लामी स्थापत्य के तत्व हैं। इन दोनों शैलियों के संयोजन से एक नई और समृद्ध स्थापत्य शैली का विकास हुआ (Asher, 1992)।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुगल वास्तुकला के विकास में इस्लामी स्थापत्य परंपराओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। मुगल शासकों ने इस्लामी स्थापत्य के सिद्धांतों को अपनाते हुए उन्हें भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों के साथ समन्वित किया। परिणामस्वरूप एक ऐसी स्थापत्य शैली विकसित हुई जो भव्यता,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, January 2026 Impact Factor: 7.67

सौंदर्य और सांस्कृतिक विविधता का अद्भुत उदाहरण है। मुगल काल की इमारतें आज भी इस सांस्कृतिक समन्वय और कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतीक हैं। ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, हुमायूँ का मकबरा और लाल किला जैसी इमारतें इस बात का प्रमाण हैं कि इस्लामी स्थापत्य परंपराओं ने भारतीय वास्तुकला को किस प्रकार समृद्ध किया।

संदर्भ सूची

1. अली, ए., और हसन, ए. एस. (2018). मलेशियाई मस्जिदों पर मुगल वास्तुकला शैली का प्रभाव. द अरब वर्ल्ड जियोग्राफर. https://doi.org/10.5555/1480-6800-21.4.318
2. आशर, सी. बी. (1992). मुगल भारत की वास्तुकला. जर्नल ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़. https://doi.org/10.1017/CBO9780511584080
3. आशर, सी. बी., और टैलबोट, सी. (2006). यूरोप से पहले का भारत. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. कोच, ई. (2006). मुगल वास्तुकला: इसके इतिहास और विकास की एक रूपरेखा. मुकर्नास: एन एनुअल ऑन इस्लामिक आर्ट एंड आर्किटेक्चर. https://doi.org/10.1163/22118993_02301003
5. खान, एम. ए., और अमीन, एम. ए. (2024). मुग़ल वास्तुकला के लिए वास्तुशिल्पीय और वंशावली संदर्भ के रूप में तैमूरी वास्तुकला की खोज. शोधकोश: दृश्य और प्रदर्शन कलाओं की पत्रिका. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2519
6. गुप्ता, ए., खान, एम. ए., और अमीन, एम. ए. (2024). मुग़ल वास्तुकला में ज्यामितीय पैटर्न: एक मात्रात्मक दृष्टिकोण से. शोधकोश: दृश्य और प्रदर्शन कलाओं की पत्रिका. https://doi.org/10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2699
7. ग्राबर, ओ., और एटिंगहॉसेन, आर. (2001). इस्लामी कला और वास्तुकला: एक व्यापक समीक्षा. जर्नल ऑफ़ इस्लामिक स्टडीज़. https://doi.org/10.1093/jis/12.1.1
8. टिलोटसन, जी. एच. आर. (2010). मुगल भारत और इस्लामी परंपराओं की स्थापत्य विरासत। आर्किटेक्चरल हेरिटेज जर्नल। https://doi.org/10.3366/arch.2010.0008
9. देसाई, Z. A. (2014). भारत में इंडो-इस्लामिक वास्तुकला: ऐतिहासिक विकास और शैलीगत परिवर्तन. इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू. https://doi.org/10.1177/0376983614543134

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, January 2026
Impact Factor: 7.67

10. नाथ, आर. (2006). मुगल वास्तुकला का इतिहास. अभिनव पब्लिकेशन्स आर्किटेक्चरल स्टडीज. https://doi.org/10.1080/02666030.2006.9628642
11. नेसिपोग्लू, जी. (1995). इस्लामी वास्तुकला में ज्यामिति की भूमिका। जर्नल ऑफ द सोसाइटी ऑफ आर्किटेक्चरल हिस्टोरियंस। https://doi.org/10.2307/990950
12. ब्राउन, पी. (2013). भारतीय वास्तुकला: इस्लामी काल. डी.बी. तारापोरेवाला संस.
13. ब्लूम, जे. एम. (2013). मीनार और इस्लामी स्थापत्य प्रतीकवाद। ऑक्सफोर्ड इस्लामिक स्टडीज। https://doi.org/10.1093/acprof:oso/9780195305940.001.0001
14. ब्लेयर, एस. एस., और ब्लूम, जे. एम. (2003). इस्लाम की कला और वास्तुकला 1250-1800. येल यूनिवर्सिटी प्रेस स्टडीज. https://doi.org/10.37862/aaeportal.00124
15. मिशेल, जी. (2008). मुगल वास्तुकला और इसका सांस्कृतिक संदर्भ. आर्किटेक्चरल हिस्ट्री रिव्यू. https://doi.org/10.2307/1568794
16. मुमताज़, टी. के. (2025). अनुपात: मुगल वास्तुकला का शाश्वत सार. जर्नल ऑफ़ ट्रेडिशनल बिल्डिंग, आर्किटेक्चर एंड अर्बनिज़्म. https://doi.org/10.51303/jtbau.vi6.887
17. रिज़वी, S. A. A. (2002). मध्यकालीन भारत में इंडो-इस्लामिक संस्कृति और वास्तुकला. इस्लामिक कल्चर जर्नल. https://doi.org/10.1163/156851902760997260
18. शम्सुज्जोहा, ए. टी. एम., और इस्लाम, एच. (2011). संरचना, सजावट और सामग्री: मध्यकालीन ढाका की मुगल मस्जिदें. जर्नल ऑफ़ द बांग्लादेश एसोसिएशन ऑफ़ यंग रिसर्चर्स. https://doi.org/10.3329/jbayr.v1i1.6841
19. साकिब, एम., और अली, ए. (2023). फ़ारसी वास्तुकला: उत्तरी भारत में मुगल शाही मस्जिदों के लिए प्रेरणा का स्रोत. जर्नल ऑफ़ इस्लामिक आर्किटेक्चर. https://doi.org/10.18860/jia.v7i1.21013
20. हसन, P. (2007). मुग़ल वास्तुकला की सजावट में इस्लामिक कला की भूमिका. जर्नल ऑफ़ इस्लामिक आर्ट स्टडीज़. https://doi.org/10.1163/157006707781056041
21. हाशमी, ए. (2019). लाहौर की मुग़ल-युगीन मस्जिदों में आंतरिक सज्जा का दर्शन. कला, वास्तुकला और निर्मित पर्यावरण की पत्रिका. https://doi.org/10.32350/jaabe.12.04
22. हिलनब्रैंड, आर. (1999). इस्लामी वास्तुकला: रूप, कार्य और अर्थ। एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस स्टडीज। https://doi.org/10.3366/edinburgh/9780748613799.001.0001